होली के दिन रक्त के छींटे

घर से भागकर भगतसिंह कानपुर चले गए। वहां वे गणेषशंकर विद्यार्थी के साप्ताहिक 'प्रताप' के संपादकीय विभाग में काम करने लगे। कानपुर में ही क्रांतिकारी पार्टी से उनके गहरे संबंधा बने। पंजाब में बब्बर अकाली आंदोलन चल रहा था। उस आंदोलन के छह कार्यकर्ताओं की फांसी पर 'एक पंजाबी युवक' के नाम से 15 मार्च, 1926 के 'प्रताप' में यह लेख हिंदी में छपा था। साढ़े अठारह वर्शीय भगतसिंह का यह पहला लेख है।

होली के दिन - 27 फरवरी 1926 के दिन, जब हम लोग खेल-कूद में व्यस्त हो रहे थे, उसी समय इस विशाल प्रदेश के एक कोने में एक भीषण कांड किया जा रहा था। सुनोगे तो सिहर उठोगे! कांप उठोगे!! लाहौर सेंटल जेल में ठीक उसी दिन छह बब्बर अकाली वीर फांसी पर लटका दिए गए। श्री किशन सिंह जी गड़गज्ज, श्री संत सिंह जी, श्री दिलीप सिंह जी, श्री नंद सिंह जो, श्री करम सिंह जी व श्री धम सिंह जी लगभग दो वर्ष से अपने इस अभियोग में जो उपेक्षा व लापरवाही दिखा रहे थे, उसी से जाना जा सकता था कि वे इस दिन को प्रतीक्षा कितने चाव से करते थे! महीनों बाद जज महोदय ने फसला सुनाया। छः को फांसी, बहुतों को कालापानी अथवा देश-निकाला और लंबी-लंबी कैदें।....

नगर में वही धूम थी। आने-जाने वालों पर उसी प्रकार रंग डाला जा रहा था। कैसी भोषण उपेक्षा थी। यदि वे पथभ्रष्ट थे तो होने दो, उन्मत्त थे तो होने दो। वे तो निर्भीक देशभक्त थे। उन्होंने जो कुछ किया था, इस अभागे देश के लिए ही तो किया था।.... श्री टेगार्ड महोदय विपक्षी दल के होने पर भी जतिन मुकर्जी, बंगाल के वीर क्रांतिकारी, की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए उनकी वीरता, देश-प्रेम और कर्मशीलता की मुक्त कंठ से प्रशंसा कर सकते हैं, परंतु हम, कायर, नरपशु, एक क्षण के लिए भी आनंद-विलास छोड़ वीरों क मृत्यु पर आह तक भरने का साहस नहीं करते। कितनी निराशाजनक बात है!....

असहयोग आंदोलन पूरे यौवन पर था। पंजाब किसी से पीछे नहीं रहा। पंजाब में सिख भी उठे, बड़ी गहरी नींद से उठे और उठे खूब जोरों के साथ। अकाली आंदोलन शरु हुआ। बलिदानों की झड़ी लग गई। मास्टर मोता सिंह, खालसा मिडिल स्कूल, माहलपुर, जिला होशियारपुर के भूतपूर्व मास्टर महोदय ने एक व्याख्यान दिया। उनका वारंट निकला। परंतु सम्राट का आतिथ्य उन्हें स्वीकार न था। यों ही जेलों में चले जाने के वे विरोधी थे। उनके व्याख्यान फिर भी होते रहे। कोट फतूही नामक ग्राम में भारी दीवान हुआ, पुलिस ने चारों ओर से घेरा डाला, फिर भी मास्टर मोता सिंह ने अपना व्याख्यान जारी रखा। अंत में प्रधान की आज्ञा से सभी दर्शक उठ खड़े हुए। मास्टर जी न जाने कहां निकल गए। बहुत दिनों तक इसी तरह यह आंख-मिचौनी का खेल होता रहा। सरकार बौखला उठी। अंत में एक हमजोली ने धोखा दिया और डेढ़ वर्ष बाद एक दिन मास्टर साहब पकड़ लिए गए। यह पहला दृश्य था उस भयानक नाटक का।

गुरु का बाग आंदोलन शुरु हुआ।.... चारों ओर गिरफ्तारियों की धूम थी। सरदार किशन सिंह गड़गज्ज के नाम भी वारंट निकला। मगर वे भी तो उसी दल के थे। उन्होंने भी गिरफ्तार होना स्वीकार नहीं किया। पुलिस हाथ धोकर उनके पीछे पड़ गई, किन्तु फिर भी वे बचते ही रहे। उनका संगठित किया हुआ अपना एक क्रांतिकारी दल था।.... सरदार किशन सिंह जी कहते थे, अपनी रक्षा के लिए हमें सशस्त्र जरूर रखने चाहिए, किन्तु अभी कोई और कदम न उठाना चाहिए। परंतु बहुमत दूसरी ओर था। अंत में फसला हुआ कि तीन व्यक्ति अपने नाम घोषित कर दें। श्री कर्म सिंह, श्री धन्ना सिंह और श्री उदय सिंह जी आगे बढ़े। यह उचित था अथवा अनुचित, इसे एक तरफ करके ज़रा उस समय की कल्पना तो कीजिए, जब इन नौजवान वीरों ने शपथ ली थी–

> 'हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम देश-सेवा में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे, लड़ते-लड़ते मर जाएंगे, मगर जेल जाना मंजूर न करेंगे।....'

सरकार ने पूरी ताकत लगाकर इन्हें पकड़ने की कोशिश की, मगर सफलता न मिली। रूड़की कलां में सरदार किशन सिंह गड़गज्ज घिर गए। उनके साथ एक और युवक भी था, जो वहीं घायल होकर पकड़ा गया। परंतु किशन सिंह वहां से भी अपने शस्त्रों की सहायता से बच निकले।.... कुछ दवाई रगड़ने को देकर एक साधू बूटी लेने गया और पुलिस को ले आया। सरदार साहब पकड़ लिए गए। वह साधू सी.आई.डी. विभाग का सब-इंस्पेक्टर था। बब्बर अकाली वीरों ने अपना काम खूब जोरों के साथ शुरु कर दिया। कितने ही सरकार के सहायक मार डाले गए! दोआब (व्यास और सतलुज के बीच में), जालंधर और होशियारपुर का जिल पहले ही भारत के राजनीतिक मानचित्र में प्रसिद्ध है। 1915 के शहीदों में भी अधिकतर इन्हीं जिलों के लोग थे। अब फिर वहीं पर धूम मच गई। पुलिस विभाग ने सारी शक्ति खर्च कर दी, परंतु कुछ न बन पड़ा। जालंधर से कुछ दूर एक बिल्कुल छोटी सी नदी है। उसके किनारे एक गांव में चौंतासाहब नामक गुरुद्वारा है। उसमें श्री कर्म सिंह जी, श्री धन्ना सिंह जी, श्री उदय सिंह जी तथा श्री अनूप सिंह जी दो-एक और व्यक्तियों के साथ बैठे आपस में कुछ विचार-विमर्श कर रहे थे कि वहां पुलिस आ धमकी। सारे बम श्री अनूप सिंह के कब्जे में थे। ये सब लोग वहां से फरार होकर गांव में छिप गए। पुलिस ने लाख सिर मारा, किन्तु सफल न हुए। अंत में पुलिस की ने एक घोषणा की कि बागियों को निकालो, वरन् गांव में आग लगा दी जाएगी। किन्तु पुलिस की घोषणा के बावजूद गांव वाले विचलित नहीं हुए।

अवस्था को देखकर वे सब खुद ही बाहर निकल पड़े। सारे बम अनूप सिंह ले भागा और जाकर आत्म-समर्पण कर दिया। शेष चार व्यक्ति वहीं पर घिरे हुए खड़े थे। पुलिस के अंग्रेज कप्तान ने कहा, 'कर्मसिंह, हथियार छोड़ दो, तुम्हें माफ कर दिया जाएगा।' वीर ने ललकार कर जवाब दिया – 'हम अपने देश के लिए सच्चे क्रांतिकारी की तरह लड़ते-लड़ते शहीद हो जाएंगे, किन्तु हथियार नहीं डाल सकते। उन्होंने अपने तीनों साथियों को ललकारा। वे सिंह की तरह गरज उठे। लड़ाई छिड़ गई। खूब दनादन गोलियां चलीं। गोली-बारूद समाप्त होने पर, वे वीर नदी में कूद पड़े और घंटों गोलियों की वर्षा होते रहने पर ये चारों वीर शहीदी प्राप्त कर गए।

श्री कर्म सिंह की आयु लगभग 75 वर्ष थी। वह कनाडा में रह चुके थे। उनका आचरण पवित्र और चरित्र आदर्श था। सरकार ने समझा, बब्बर अकाली खत्म हो गए, परंतु वे उन्नति कर रहे थे। 18 वर्षाय दिलीप सिंह एक अत्यंत सुंदर, सुदृढ़, हृष्ट-पुष्ट, किन्तु अशिक्षित नवयुवक थे, और उनका डाकुओं का साथ हो गया था। धन्ना सिंह जी की शिक्षा ने उन्हें डाकुओं से एक सच्चा क्रांतिकारी बना दिया। उधर सरदार बंता सिंह और वरियाम सिंह आदि कई प्रसिद्ध डाकू डाकेबाजो छोड़कर इनमें आ मिले।

....एक दिन मानहाना नामक गांव में धन्ना सिंह ठहर हुए थे, पुलिस बुला ली गई। धन्ना सिंह रात में सोते हुए ही पकड़ लिए गए। उनका भरा हुआ पिस्तौल छीन कर हाथों में हथकड़ी लगा दी गई और उन्हें बाहर लाया गया। बाहर साधारण सिपाही और दो अंग्रेज अफसर उनको घेर कर खड़े हो गए। ठीक उसी समय धमाके की आवाज़ हुई। धन्ना सिंह जी ने बम चला दिया था। खुद शहीद होते-होते एक अंग्रेज अफसर और दस सिपाहियों को भी मौत की नींद सुला गए व कई अन्य लोग भी बुरी तरह घायल हुए।

इसी तरह मुंडेर नामक गांव में बैठे हुए बंता सिंह, ज्वाला सिंह आदि कई लोग घिर गए। ये सब छत पर बैठे हुए थे। गोली चली, कुछ देरे तक अच्छी झड़प होती रही, किन्तु पुलिस ने पंप से मिट्टी का तेल छिड़क कर घर में आग लगा दी, जिसमें बंता सिह शहीद हो गए, किन्तु वरियाम सिंह किसी तरह बच निकलने में कामयाब हो गए।

वरियाम सिंह अकेले बचे थे। जालंधर व होशियारपुर में पुलिस का अधिक ज़ोर देखकर वे लायलपुर चले गए। एक दिन वहां पर पुलिस ने आ घेरा, मगर खूब शान से लड़ते हुए वे वहां से बच निकले। वे बहुत थक गए थे व कोई साथी भी साथ न था। दशा बड़ी विचित्र थी। एक दिन ढेसिंया नामक गांव में अपने मामा के पास पहुंच गए। शस्त्र बाहर रखे थे। शाम को भोजन करने के बाद अपन शस्त्रां के पास जा रहे थे कि पुलिस ने आकर घेर लिया। अंग्रेज अफसर ने उन्हें पीछे से आ पकड़ा। उन्होंने कृपाण से ही उसे बुरी तरह घायल कर दिया। फिर वे नीचे गिर गए। हथकड़ी पहनाने की सारी चेष्टाएं विफल हुई। दो वर्ष के पूर्ण दमन के पश्चात अकाली जत्थे का अंत हुआ। उधर मुकदमा चलने लगा, जिसका परिणाम ऊपर लिखा जा चुका है। कुछ दिन पूर्व ही इन लोगों ने शीघ्र फांसी पर चढ़ाए जाने की इच्छा प्रकट की थी। उनकी वह इच्छा पुरी हो गई। वे शांत हो गए।

.....